प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम

प्रा॰ डॉ॰ हाके एम॰ आर॰
परभणी

डॉ. पोपट भावराव बिरारी

अकॅडेमिक
बुक पब्लिकेशन्स

अॅकॅडेमिक
बुक पब्लिकेशन्स

प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम
© डॉ. पोपट भावराव बिरारी

• **प्रकाशक** •
अॅकॅडेमिक बुक पब्लिकेशन्स
'ज्ञानदीप', फ्लॅट नं. 3, चैतन्य नगर, प्रगती स्कूल के सामने, जलगाँव 425001.

• **प्रमुख वितरक** •
प्रशांत बुक हाऊस
3, प्रताप नगर, श्री संत ज्ञानेश्वर मंदिर रोड,
नूतन मराठा महाविद्यालय के पास, जलगाँव 425001.
दूरध्वनी : 0257-2235520, 2232800 मो. 9421636460

• **टाईपसेटींग** •
अॅकॅडेमिक बुक पब्लिकेशन्स, जलगाँव

संस्करण : प्रथम, जनवरी 2022
आयएसबीएन : 978-93-92425-96-7
मूल्य : ₹ 295/-

e -Book s are available online at kopykitab.com

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के तहत इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री कोई भी व्यक्ति/संस्था/समूह आदि इस पुस्तक की आंशिक या पूरी सामग्री किसी भी रूप में बिना अनुमति के मुद्रित/प्रकाशित/फोटो कॉपी नहीं कर सकता। इस का उल्लंघन करनेवाले कानूनी तौर पर हानि के उत्तरदायी होंगे।

प्रयोजनमूलक हिंदी : विविध आयाम

प्रा॰ डॉ॰ हाके एम॰ आर॰
परमणी॰

डॉ. पोपट भावराव बिरारी

अकॅडेमिक
बुक पब्लिकेशन्स

मिला वह प्रशंसनीय रहा है; उनके प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। मराठा विद्या प्रसारक समाज, नासिक संस्था के सभी पदाधिकारी, संचालक, संलग्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, प्राध्यापक एवं अन्य कर्मचारी आदि से प्रेरणा मिलती रही। अतः उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

अतः ज्ञात-अज्ञात सभी विद्वतजन, गुरुजन, स्नेही, हिंदी प्रेमी आदि के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। प्रस्तुत ग्रंथ से हिंदी जगत के छात्र एवं पाठक लाभान्वित होंगे, ऐसी अभिलाषा रखता हूँ।

दिनांक : 01 जनवरी 2022
स्थल : नासिक (महाराष्ट्र)

डॉ. पोपट भावराव बिरारी
(सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग)

अनुक्रमणिका

1. **प्रयोजनमूलक हिंदी : अवधारणा और महत्त्व** 7
   – डॉ. पोपट भावराव बिरारी
2. **प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरुप एवं विशेषताएँ** 12
   – डॉ. महावीर रामजी हाके
3. **प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता** 17
   – बसोरी लाल इनवाती
4. **प्रयोजनमूलक हिंदी का संवैधानिक उपबंध** 22
   – डॉ सुरेश कुमार
5. **प्रयोजनमूलक हिंदी की व्यावहारिक उपादेयता** 27
   – डॉ. लक्ष्मण तु. काळे
6. **प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध क्षेत्र** 33
   – डॉ. वि. सरोजिनी
7. **प्रयोजनमूलक हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ** 39
   – प्रा. नटवर संपत तडवी
8. **राजभाषा हिंदी का प्रयोजनपरक अध्ययन** 43
   – डॉ. लवलीन कौर
9. **वैज्ञानिक-तकनीकी क्षेत्र में हिंदी** 48
   – श्रीमती मंगला जटगोंडा
10. **बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग और समस्याएँ** 52
    – मधु मेहता साथी
11. **पारिभाषिक शब्दावली : स्वरुप तथा निर्माण प्रक्रिया** 57
    – श्रीमती श्रुती मण्किकर
12. **कार्यालयीन हिंदी के प्रमुख कार्य** 62
    – रोहिणी रामचंद्र सालवे
13. **संक्षेपण लेखन** 67
    – लूनेश कुमार वर्मा
14. **जनसंचार माध्यम : स्वरूप एवं वर्गीकरण** 72
    – डॉ श्रीकला. यू
15. **सिनेमा की पटकथा का स्वरूप और लेखन प्रक्रिया** 78
    – डॉ. रघुनाथ नामदेव वाकळे

2

प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरुप एवं विशेषताएँ

- डॉ. महावीर रामजी हाके

हम अपने दैनिक कार्यकलापो में जिस भाषा का प्रयोग करते हैं वह सामान्य व्यवहार की भाषा होती है परंतु विभिन्न औपचारिक कार्यो के लिए जैसे: कार्यालय, बैंकिंग, तकनीकी आदि क्षेत्रों में परस्पर पत्र-व्यवहार के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, वह प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है।

इस प्रकार किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा को प्रयोजनमूलक भाषा कहते है।

प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरुप निम्नलिखित आधारों पर स्पष्ट किया जा सकता हैं :-

1. **प्रयोजनीयता :-** प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग किसी विशिष्ट प्रयोजन के लिए किया जाता है। इसमें प्रयोजनीयता का होना अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक युग में प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोग व्यवसाय, न्याय, विज्ञान, संचार, कार्यालय, तकनीकी आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त होनेवाली प्रयोजनमूलक हिंदी की विशिष्ट शब्दावली और पारिभाषिक शब्दावली होती हैं। संचार प्रयुक्ति की अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। इसी प्रकार से वाणिज्य, शासन, तकनीकी, विधि आदि की भी अपनी अपनी विशिष्ट शब्दावली होती है। इस प्रकार प्रयोजनमूलक हिंदी में परियोजनीयता होनी नितांत आवश्यक है।
2. **एकरुपता :-** प्रयोजनमूलक हिंदी में एक विषय के संदर्भ में प्रयुक्त शब्द का एक सुनिश्चित अर्थ होता है और वह संबंधित क्षेत्र विशेष पर आधारित रहता है। क्षेत्र-विशेष के बदल जाने पर उस शब्द का अर्थ भी बदल सकता है। जैसे 'सेल' शब्द का अर्थ जीव विज्ञान में कोशिका, भौतिकी में बैटरी और साहित्य में कक्ष होता है। सामान्य व्यवहारिक हिंदी में एक शब्द के अनेक अर्थ हो सकते है। जैसे 'कमल' के पर्यायवाची शब्द पंकज, जलज, सरोज हैं तथा 'कृष्ण' का अर्थ श्याम, काला, कृष्ण नामक व्यक्ति भी हो सकता है। कृष्ण नामक व्यक्ति को किशन, कन्हैया, घनश्याम, गोपाल भी कह कर बुला सकते

हैं तथा 'अंधे' को सूरदास कहकर पुकारते है। इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग प्रयोजनमूलक हिंदी में नहीं होता है। इसमें पारिभाषिक शब्दावली की वर्तनी एवं अर्थ सुनिश्चित होता है तथा इसके प्रयोग में एकरुपता बनी रहती है। यहाँ 'अंधे', के लिए 'अंधा' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है। तथा 'काले' के लिए 'काला' ही लिखा जाता है। इसलिए प्रयोजनमूलक हिंदी मे अलंकारिक भाषा अथवा लक्षणा, व्यंजना शब्द-शक्ति का भी प्रयोग नही किया जाता। इसमें सीधे और विशिष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए अभिधात्मक भाषा का प्रयोग करते है। इससे इसकी एकरुपता बनी रहती है।

3. **मानकता :-** प्रयोजनमूलक हिंदी में हिंदी भाषा के मानक रुप का प्रयोग क्रिया जाता है जिससे एकरुपता बनी रहे तथा भावों के आदान-प्रदान में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। इसके लिए विभिन्न वैज्ञानिक, तकनीकी, वाणिज्यिक, व्यावसायिक आदि क्षेत्रों से पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण किया जाता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया गया है और किया जा रहा है। इसमें विषय-वस्तु पर विशेष ध्यान दिया जाता है। कार्यालय, पत्रकारिता, वाणिज्य, व्यापार, उद्योग, विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र आदि से संबंधित शब्दों का निर्माण किया जाता है। प्रयोजनमूलक हिंदी का मानक रुप सामान्य बोलचाल की हिंदी से भिन्न तथा प्रत्येक स्थिति में एक जैसा होता है। प्रयोजनमूलक हिंदी के मानक रुपसे इसके प्रयोग में स्पष्टता तथा एकरुपता आ जाती है।
4. **भाषिक भंगिमा :-** जिस प्रकार भाषा व्यवहार में भाषा के विभिन्न रुपों अथवा भेदो प्रभेदों का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार से प्रयोजनमूलक हिंदी के प्रगतिशील स्वरुप में विधि, बैंकिंग, कार्यालयी, तकनीकी, वैज्ञानिक आदि से संबंधित क्षेत्रों में होने वाले नवीनतम प्रयोगों तथा खोजों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए उसी प्रकार की शब्दावली का निर्माण किया जाता है। इस शब्दावली का निर्माण संबंधित प्रयोगो अथवा खोज के देश में अथवा विदेश में होने के आधार पर किया जाता है। देशी खोज के लिए भारतीय परिवेश के अनुसार निर्धारण किया जाता है। इस शब्दावली का निर्माण खोजकर्ता

या प्रयोगकर्ता के नाम के आधार पर भी किया जा सकता है। इसके लिए भाषा के सरल नया सहज रुप को अपनाया जाता है। जिससे बना हुआ शब्द स्पष्ट हो तथा एक निश्चित अर्थ प्रदान कर सके।

अंत: स्पष्ट है कि प्रयोजनीयता, एकरुपता, मानकता और भाषिक भंगिमा वे तत्व है जो प्रयोजनमूलक हिदी का स्वरुप निर्धारित करते हैं। इन तत्वो के कारण जहाँ प्रयोजनमूलक भाषा उस विशिष्ट क्षेत्र से जुडे हुए लोगों को लाभान्वित करती हैं वही धीरे-धीरे आम आदमी भी उन शब्दों से उसी अर्थ में जुडने लगता है जिस अर्थ को वे उस विशिष्ट क्षेत्र में अभिव्यक्त करना चाहतें है। उदाहरण के लिए कंप्युटर, एमआरआई, सीटी स्कैन, एक्स-रे आदि शब्द अब आदमी प्रयोग कर रहा है। यह सही है कि प्रयोजनमूलक भाषा के लिए पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करते समय पहली नजर में यह अवश्य लगता है कि यह शब्द जनसामान्य के लिए अग्राह्य होंगे लेकिन जैसे जैसे इन शब्दो का प्रचलन दैनिक जीवन में होने लगता है वे शब्द आम आदमी के लिए भी ग्राह्य बन जाते हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरुपगत विशेषताएँ :-

1. **विशिष्ट भाषा :-** प्रयोग के आधार पर भाषा के प्रमुखत: दो रुप होते है। पहला, जिसका प्रयोग सामान्य जन जीवन के दैनिक कार्यो के संदर्भ में होता है और जिसका अभ्यास या ज्ञान कोई व्यक्ति सामान्य जीवन के परिवेश से ही प्राप्त कर लेता है, और दूसरा रूप जिसका प्रयोग सामान्य जीवन के संदर्भो से भिन्न किन्ही विशेष द्वारा प्राप्त किया जाता है। इसी रूप को प्रयोजनमूलक भाषा कहा जाता है। यह भाषा तथ्यपरक अर्जित परिवेश रूप होती है। विशिष्ट प्रयोजनों में विशिष्ट वर्ग द्वारा और विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपयोग और निर्धारण होता है। इस विशिष्ट भाषा में अपने-अपने विषय की शब्दावली और संरचना होती है, जो इसे विशेष रुप प्रदान करती है। सामान्य और प्रयोजनमूलक भाषा में निहित भेद को स्पष्ट करते हुए डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी लिखते है। वास्तव में सामान्य भाषा और विशिष्ट भाषा एक होती है, किंतु शब्दावली और संरचना की दृष्टि से दोनों अलग-अलग हो जाती है। सामान्य भाषा की अभिव्यक्ति शैली लाक्षणिक, व्यंजनापरक या अनेकार्थी या अलंकारपूर्ण भी हो सकती है, जबकि विशिष्ट भाषा अभिधा-प्रधान, गंभीर, अलंकार-रहित सीधी, स्पष्ट और एकार्थी होती है। सामान्य भाषा के रुपमें खडीबोली का प्रचलित रूप देखा जा सकता है। उसके स्थानीय को देखा जा सकता है। विभिन्न

कार्यालयों, विज्ञान, विधि आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त प्रयोजनमूलक हिंदी विशिष्ट भाषा है।[1]

2. **कृत्रिमता या औपचारिकता :-** सामान्य भाषा तथा प्रयोजनमूलक भाषा में यह अन्तर होता है कि भाषा सहज रूप में विकसित होती है और प्रयोजनमूलक भाषा सप्रयास विकसित की जाती है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक भाषा कृत्रिम तथा औपचारिक होती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की विभिन्न प्रयुक्तियों को इस रुप में देखा जा सकता है। सामान्य भाषा की अभिव्यक्तियाँ तथा अनौपचारिक तथा अंतरंग भी होती है, जैसे सामान्य भाषा में 'यह पत्र सभी को देखने के लिए भेजो।'

   प्रयोजनमूलक हिंदी :- 'यह पत्र अवलोकनार्थ प्रेषित करें', 'पैसे दे दो,' 'भुगतान करें' आदि।

3. **अर्जित भाषा :-** सामान्य भाषा, भाषा का पहला चरण है और प्रयोजनमूलक भाषा उसका अगला चरण होता है। सामान्य भाषा सहज होती है। वह अनायास रुप में हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती है , लेकिन प्रयोजनमूलक भाषा अर्जित होती है। इसलिए हिन्दी भाषी प्रदेश के लोग हिन्दी के सामान्य भाषा रूप को सहज अपनाते हैं, लेकिन प्रयोजनमूलक हिन्दी उन्हें भी सायास सीखनी पडती है।

4. **प्रयोजनपरकता :-** प्रयोजनमूलक भाषा का स्वरुप प्रयोजनपरक होता है। यह भाषाई रूप सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष रुप में प्रयुक्त होता है यह इसकी विशेषता भी है और सीमा भी । सामान्य भाषा की तुलना में इसका प्रयोग क्षेत्र सीमित होता है और साहित्यिक भाषा की तुलना में अभिव्यक्ति की बहुआयामी क्षमता सीमित होती है। इस सम्बन्ध में डॉ. विनोद गोदरे ने लिखा है कि साहित्यिक भाषा में कलाग्रह के कारण भाषा साधन से साध्य बन जाती है, किन्तु प्रयोजनमूलक भाषा कभी साधन से साध्य नहीं बनती। इसी प्रकार साहित्यिक भाषा भावोच्छवास एवं संवेदन की भाषा है, परन्तु प्रयोजनमूलक भाषा सिर्फ सपाट अभिव्यक्ति माध्यम से अधिक नही होती। इसी प्रकार साहित्यिक भाषा का लक्ष्य प्राय: सौंदर्यानुभूति अथवा, कभी-कभार- चमत्कार होता है जब कि प्रयोजनमूलक हिन्दी का पहला और अंतिम लक्ष्य माध्यम (Service Tools) होता है, जीविकोपार्जन का साधन बनना होता है।[2]

5. **पारिभाषिकता एवं अभिधापरकता :–** संदिग्धता तथा अस्पष्टता एवं अनेकार्थता को प्रयोजनमूलक भाषा में कोई स्थान नही होता। जैसे कि डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी ने लिखा है.. प्रकार्य की दृष्टि से प्रयोजनमूलक भाषा तथा साहित्यिक भाषा एक ही है, किंतु इनके स्वरुप में, मूल अंतर यह है कि साहित्यिक भाषा में अर्थ बहुधा व्यंजनाश्रित और लाक्षणिक होता है, जब कि प्रयोजनमूलक भाषा अभिधापरक और एकार्थी होती है, साहित्यिक भाषा जब कि प्रयोजनमूलक भाषा अनेकार्थी होती है। प्राय: अलंकारहित, सीधी, स्पष्ट और स्वत: पूर्ण होती है।[3]

   विविध प्रयोजनों की यह भाषा कार्यालयी, बैंकिंग, विधि, इंजीनियरी, मेडिकल आदि विषयों तथा क्षेत्रों में अपनी-अपनी पारिभाषिक शब्दावली के साथ प्रयुक्त होती है।

6. **प्रयुक्ति परकता :–** भिन्न कार्यक्षेत्रों के लिए जिन भाषा रुपों का प्रयोग किया जाता है, उन्हे प्रयुक्ति (Register) कहा जाता है। जैसे कि डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी ने स्पष्ट किया है। वस्तुत: भाषा अपने आप में समरुपी होती है, परंतु प्रयोग में आने पर वह विषम रुपी बन जाती है। इन्ही प्रयोगत भेदों के कारण कई भाषा भेद दिखाई देते है। प्रयोजनमूलक हिंदी जब कार्यालयों, विज्ञान, विधि, बैंक, व्यापार, जनसंचार आदि क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है, तब उसमें कई भाषा-भेद बन जाते है। कार्यालयी हिंदी की शब्द सम्पदा और उसकी संरचना जनसंचार की शब्द-सम्पदा और उसकी संरचना में पर्याप्त भेद पाया जाएगा। इस तरह से प्रयोजनमूलक हिंदी, प्रयोजनपरक विभिन्न भाषा, रुपों की समन्वयी संज्ञा है।[4]

प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रुपों का आधार उनका प्रयोग क्षेत्र होता है। इस प्रकार उपरोक्त प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरुप एवं विशेषताएँ बतायी जाती है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा-रूप, डॉ. माधव सोनटक्के, पृ.3.
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी, डॉ. माधव सोनटक्के, पृ.04-05
3. वही, पृ.05
4. हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा रूप, डॉ. माधव सोनटक्के, पृ.04

3

प्रयोजनमूलक हिंदी की आवश्यकता

– बसोरी लाल इनवाती

किसी वस्तु चीज या विषय की आवश्यकता बताती है कि उसकी पिछली स्थिति कैसी थी। वर्तमान दशा कैसी है और भविष्य में उसकी दिशा क्या होना चाहिए। हमेशा से आवश्यकता ने नया सृजन, नया निर्माण, नयी खोज को जन्म दिया है। किसी ने कहा भी है आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। यह बात हर क्षेत्र में बहुत मायने रखती है।

हमें जानना है कि प्रयोजनमूलक हिंदी की क्या आवश्यकता है। जब हमारा काम हिंदी से ही चलता है तो ऐसे में प्रयोजनमूलक हिंदी से हमें पता चलता है कि हिंदी बोलचाल और साहित्य सृजन में आवश्यक ही नही है उसके आगे वर्तमान और भविष्य में हिंदी की स्थिति और आवश्यकता पर सोचना तथा विचार करना हमारा मकसद् है।

बिना प्रयोजन के कोई भाषा ज्यादा समय तक कायम नही रह सकती। विश्व में सभी भाषाएँ समय की आवश्यकताओं के साथ अपने स्वरूप को अद्यतन कर रही है। इसी क्रम में हिंदी ने अपने स्वरूप को प्रयोजनमूलक हिंदी मे ढाला है। आज प्रयोजनमूलक हिंदी समाज की हर आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। विश्व में ज्ञान-विज्ञान, कम्प्यूटर, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, बैंक, विधि, सूचना प्रौद्योगिकी, जनसंचार माध्यमों जैसे क्षेत्रों और नये-नये क्षेत्रों में प्रयोजनमूलक हिंदी की अति आवश्यकता है।

यदि कोई भाषा समय के साथ समाज की जरूरत पूरी नही करती, अद्यतन नही होती तो उसके लिए डॉ. अर्चना श्रीवास्तव का यह कथन समीचीन होगा –"संस्कृत भाषा विश्व की समृद्ध भाषा होने के बावजूद व्यावहारिक नही हो पायी। हिंदी को रचनात्मक या साहित्यिक भाषा बने रहने से शायद वही भूल फिर दोहरायी जाती। अत: इसकी व्यावहारिकता को बनाये रखने की अतीव आवश्यकता अनुभव की गई और यह एक दूरदर्शी सोच थी। प्रयोजनमूलक हिंदी के विकास के प्रयास तो 1955 से ही आरंभ हुए लेकिन इसमें गति 1960 में आई। प्रयोजनमूलक हिंदी ने हिंदी को एक नई दिशा प्रदान की है जिसकी अत्यंत आवश्यकता भी थी। हिंदी में कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए सरकारी स्तर पर प्रोत्साहन योजना चलायी